ੴ ओंकार सतिगुर प्रसादि ॥

मानव शरीर के लिए प्रकृति द्वारा उपहार स्वरूप प्रदान किये गये केशों का महत्व

एवम्

फांसी का दण्ड झेलने से पूर्व शहीद भगत सिंह की भाई साहिब रणधीर सिंह जी से गोष्ठि

वर्णन कर्त्ता–स्वयं भाई रणधीर सिंघ जी।

सूरा सो पहचानिये, जो लरै दीन के हेतु ॥
पुरजा पुरजा कटि मरै, कबहु न छाडै खेतु ॥
(सलोक कबीर जी)

www.sikhworld.info

Donation : A/c HDFC : IFSC 0000450 04501570003814

प्रकाशक

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

लेखक: स. जसबीर सिंघ
Ph. : (0172-2696891), 09988160484

Type Setting : Radheshyam Choudhary Mob. 09814966882

Guru's : Sahidi, Hindi Booklet, Punjabi Booklet, English Booklet, Life Style, Mitra Mandali, Gurbani Ukakashari & Gurbani Selected Tukan

Download Free

भूमिका

भारत वर्ष के स्वतन्त्रता संग्राम में अनेकों देश भक्तों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया है तथा अनेकों ने अजीवन कारावास की यातनाएं झेली हैं, बहुत से स्वतन्त्रता सैनानी अंग्रेज़ी शासन की क्रूरता झेलते हुए जीवन भर के लिए अपाहिज़ अथवा नकारा होकर रह गये। इन लोगों में से कुछ एक की कुर्बानियां उस समय मीडिया द्वारा प्रकाश में आई परन्तु उस समय मीडिया इतनी प्रगति पर न था वे अभी प्रांरभिक अवस्था में उभर ही रहा था जब यह घटना चक्र चरम सीमा पर था। अत: अनेकों देश भक्तों की कुर्बानियां प्रकाश में नहीं आ पाई, वे लोग अदृश्य ही रह गये। इन में से एक देश भक्त थे। संत प्रवृति के वीर पुरुष भाई सरदार रणधीर सिंघ जी। आप को गद्दर आंदोलन के कार्यक्रत्ताओं के साथ सहयोग करने तथा फीरोज़पुर छावनी (किले) पर आक्रमण करने के षड्यन्त्र को रचने के आरोप में 30 मार्च 1916 ई. को लाहौर के न्यायलय ने विद्रोह के अपराध में आजीवन कारावास तथा सम्पति कुर्की का दण्ड दिया।

आपने यह कारावास का दण्ड भारत की विभिन्न जेलों में भोगा तद्पश्चात 4 अक्तूबर 1930 ई. को सैंटरल जेल लाहौर से मुक्त कर दिया गया। उस समय की राष्ट्रीय मीडिया ने आपको कोई विशेषता नहीं दी परन्तु पंजाबी पंथक समाचार पत्रों ने आप की देश भक्ति को उबारा, आप की इस समय के कारावास में झेली यातनाओं का भी उल्लेख किया। यदि आप के लिए यह कहा जाये कि आप ज़िंदा शहीद हैं तो कोई अतिशोक्ति नहीं होगी क्योंकि आप द्वारा अपने परम मित्र सरदार नाहर सिंघ को समय-समय पर लिखे गये पत्र, जिन में जेल की यातनाओं के कूड़वे अनुभव प्रगट किये गये है। यह स्पष्ट करने के लिए प्रयाप्त है। आप के जेल पत्रों के संग्रह में से कुछ एक अंशों का सारांश यहां पाठकों की रुची को मद्देनज़र रखकर आधुनिक शैली में लिखने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है पाठकगण त्रुटियों को क्षमा करेंगे।

नोटः

वास्तव में पुस्तक जेल चिठियों एक पत्रों का संग्रह न होकर भाई सरदार रणधीर सिंघ जी की स्वजीवनी ही है।

यूं तो आप की प्रत्येक चिट्ठी (पत्र) अद्भुत वर्णनीय है परन्तु एक लघु पुस्तक नि:शुल्क बांटने के लिए यहां केवल दो वृत्तातों को ही जन-साधारण की दृष्टिगौचर करने का शुभअवसर प्राप्त कर रहे है।

केशों का महत्त्व

भाई साहिब रणधीर सिंघ जी जब नागपुर जेल में कैद थे उनदिनों की एक घटना का यहां उल्लेख किया जा रहा है। एक दिन सिंघ साहब ने जब केशी स्नान करके केशों में तेल मालिश करने लगे तो उन्होंने पाया कि तेल जो उन्हें इस बार ईशू किया गया है वह बदबूदार तथा हल्के म्यार का है। वास्वत में भ्रष्टचार के कारण सप्लाई में हेरा फेरी की गई थी। तब भाई रणधीर सिंघ जी ने उस तेल का प्रयोग नहीं किया क्योंकि वह गंदे तेल को केशों में लगाने के लिए सहमति न हुए। इस का कारण था, वह बदबूदार तेल लगाना केशों का अपमान करना समझते थे अत: उन्होंने अपने धार्मिक विश्वास के अनुसार बिना केशों के कंधा किये भोजन ग्रहण ही नहीं किया। वहां के स्थानीय कर्मीयों ने भोजन न ग्रहण करने की क्रिया को सिंघ जी द्वारा शुद्ध तेल न मिलने के कारण भूख-हड़ताल द्वारा रोष प्रगट करना माना। भूख हड़ताल की क्रिया जब चौथे दिन में पहुंच गई तब यह बात जेल के मुख्य अधिकारी, जेल के सुपरिटेंडेंट तक पहुंची। वह तभी भाई रणधीर सिंघ जी से मिलने पहुंचा उसने सब घटना कर्म को ध्यान से सुना और कहा-सिंघ जी मैं आप की धार्मिक भावनाओं का सम्मान करता हूँ परन्तु मेरी दृष्टि में यह बात कोई इतनी बड़ी नहीं थी जिस पर आप ने भूख हड़ताल कर दी। तब भाई रणधीर सिंघ जी ने कहा-हमारे धार्मिक विश्वासों अनुसार केश प्रकृति द्वारा दिया गया मनुष्य को अमूल्य उपहार है। हम लोग इन को अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करते हैं अत: इनको सजानें-सुवारने में कोई कुत्ताई नहीं करते, इस प्रकार हम अपने न्यारे स्वरूप में विद्यमान रहते है। इस पर सुपरिटेंडेंट पुलिस (वरिष्ट अधिकारी) ने कहा-मेरे विचार से तो सिर पर वालों (केशों) को रखने की आवश्यकता ही क्या है? इस गम्भीर प्रश्न के उत्तर में भाई रणधीर सिंघ जी ने बहुत धैर्य से गम्भीर मुद्रा में उत्तर दिया यदि मैं यह प्रश्न करू कि शरीर के साथ सिर को साथ रखने की क्या आवश्यकता है? पुलिस अधिकारी-यह आप का प्रश्न जहां हास्यप्रद है, वहीं आश्चर्यजन भी है यदि हम शरीर से सिर को अलग कर देगें तो हमारा अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। उत्तर में भाई रणधीर सिंघ जी ने कहा-वही तो मैं कह रहा हूँ हमें प्रकृति के नियमों को समझना है, जिस प्रकार सिर शरीर का अभिन्न अंग है ठीक उसी प्रकार प्रकृति द्वारा सिर पर केश भी मानम शरीर का अभिन्न अंग है। प्रकृति ने इन केशों को यूंही नहीं दिया। मानव को इस के पीछे छिपे बहुत से सुदृड़ रहस्य को खोजना है?

पुलिस अधिकारी – कृप्या आप इस रहस्य को विस्तार पूर्वक वर्णन किजिए

स. रणधीर सिंघ जी - आप प्रकृति द्वारा भांति-भांति के जीव अथवा वनस्पति, फूल, पौधे इत्यादि देखते ही है। इन रंग-बिरंगे जीवों, फूलों में प्रकृति की अनूप छटा दिखवाई देती है कहीं कोई चूक नहीं

रहती उसके अद्‌भुत दृश्यों में वह स्वयं विद्यमान है। उस की कोई भी कृति यूं ही नहीं। वे सभी अनेकों रहस्यों को अपने में संजोये बैठी है। अत: हमें तो उन रहस्यों को जानने का प्रयास ही करना है। प्रकृति द्वारा निर्मित मनुष्य शरीर उस की सर्वश्रेष्ट रचना है यदि हम इस शरीर के भेदों को जानने को प्रयास करें तो यह असीम है। जैसा कि आप जानते हैं, हमारे वैज्ञानिक अथवा डाक्टर मुनष्य के शरीर के विभन्नि अंगों को जानने का कई वर्षो से प्रयास करते चले आये हैं परन्तु वे यह कहते हैं कि अभी हमारी खोज प्रारम्भिक अवस्था में ही है अभी तो बहुत कुछ जानना बाकि है! जिस प्रकार शरीर के विभिन्न अंगों की खोज कभी सम्पूर्ण नहीं हो पायेंगी, ठीक इसी प्रकार मानव समाज केशों के अस्तित्व के रहस्यों से अभी तक वंचित ही है परन्तु जिन महापुरुषों ने अपने आध्यात्मिक बल (ज्ञान) से इसे खोजा है वे जान गये है कि शरीर के समस्त रोम तथा सिर के विशेष रूप में केश अनंत शक्तियों का भण्डार अपने में संजोये बैठे हैं। ये केश हमारे लिए अनेकों प्रकार के हारमोंस तथा विटामिनस का उत्पादन का स्रोत है। जिनसे हमें हष्ट - पुष्ट रहने में सहायता को ध्यान में रखकर उसके लिए रोमों अथवा केशों की व्यवस्था की हुई होती है। जो इस को सौंद्रर्य प्रदान करती है। विशेषकार पुरुषों की मुंछे उस के चेहरे को तेजोमय बनाती है तथा वीरता की प्रतीक है। इस प्रकार दाड़ी यदि सम्पूर्ण रूप में किसी के चेहरे पर शुशोभित है, तो वह दैवी गुणों की प्रतीक होती है। दैवी गुणों का अर्थ है - दया, धैर्य, नम्रता, समदृष्टिता, सत्यवादी इत्यादि। केश, दाड़ी और मुंछे व्यक्ति के व्यक्तित्व को निखारता ही नहीं बल्कि समाज में उसे सम्मान भी दिलवाता है। इतिहास साक्षी है सभी महापरुषों के केश, दाड़ी - मुंछे इत्यादि ज्यों के त्यों ही होते थे। वे लोग इन प्रकृति द्वारा दिये गये रोमों का कहीं भी खण्डन नहीं करते थे। उन का मानना था कि यदि हम ईश्वर को मानते है तो हमें ईश्वर द्वारा दिये गये केशों का आदर करते हुए उनका खण्डन नहीं करना चाहिए क्योंकि प्रभु की इच्छा भी यहीं है।

आज तक वैज्ञानिकों ने जितनी भी प्राप्तियां की हैं उन का मानना है कि उन्होंने प्रकृति के सिद्धांतों को खोजा है, और उन का अनुसरण किया है इस बात का तात्पर्य यह हुआ कि प्रकृति के नियमों के अनुकूल जीवन जीने में ही प्राप्तियां है। केश प्रकृति ने उपहार स्वरूप हमें प्रदान किये है। यही प्रकृति का नियम है। अब प्रश्न यह उठता है, कि आप लोग केशों को क्यों काटते है? जब कि वे बार - बार लगातार उगते ही चले आते हैं?

जैसा कि आप जानते ही है - महिलाए लम्बे, घन्ने केशों के लिए ललायित रहती है। क्यों वे अपने जेब खर्च का आधा भाग विशेष प्रकार के तेलों की खरीद के लिए खर्च करती है? उत्तर है - केश सुन्दरता की प्रतीक है।

हम अब प्रकृति के कुछ नियमों का अध्ययन करेंगे - प्रकृति ने पुरुष को नारी की अपेक्षा सुन्दर

तथा सुदृड़ शरीर दिया है जैसे - पक्षियों में मोर सुन्दर है, मौरनी नहीं, मुर्गा सुन्दर है, मुर्गी नहीं। इस प्रकार पशुओं में शेर सुन्दर है शेरनी नहीं, बैल सुन्दर है, गाय नहीं। ठीक इसी प्रकार पुरुषों को प्रकृति ने केश, दाड़ी तथा मुंछे देकर स्वयं शृंगारा है। जब कि नारी को कृतियम शृंगार की आवश्यकता रहती है परन्तु सम्पूर्ण दाड़ी - मुंछो वाला पुरुष नारी की अपेक्षा कही अधिक सुन्दर है।

जिन मनुष्यों ने प्रकृति की सर्वश्रेष्ट मानव सुरचना को समझा है उन्होंने शरीर के रोमों तथा केशों को ज्यों का त्यों ही रखा है अर्थात उन्होंने इन बालों को (God Gift) ईश्वर्य उपहार जानकर उस प्राकृतिक सौन्दर्य (Natural Beauty) जानकर सदैव उस का (Maintenance) रख रखाव ही किया है। अर्थात केशों को काट - छाट के (Modification) नहीं करते। वह उन्हें अल्लाहीनूर जान कर As it is ही रखते है।

एक विदेशी बुद्धिजीवि **आरनलड टाइनबी** ने समस्त विश्व के लोगों के रहन - सहन तथा उनकी धार्मिक आस्थाओं, प्रम्मराओं इत्यादि का अध्ययन किया और उन्होंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी। तभी उन से एक महिला ने प्रश्न किया। कृप्या आप बताए कि विश्व में सब से सुन्दर लोग कौन से हैं? उन महानुभव का उत्तर था - विश्व में यदि कोई सुन्दर पुरुष हैं, तो वे हैं साबुत - सूरत सिक्ख लोग। यह सुनकर उसी महिला ने दूसरा प्रश्न किया विश्व में सब से बदसूरत लोग कौन हैं? इस प्रश्न पर उस विद्वान पुरुष का कहना था - वह सिक्ख पुरुष जिसने दाड़ी - मुंछों आदि का खण्डन किया होता है। वही पुरुष विश्व का सब से करूप मनुष्य दिखाई देता है।

इस दृष्टि कोण को मद्देनज़र रख के पाठकों के लिए यहां एक काव्य रूप में कुछ सिक्ख युवकों की दाड़ी के नमूनों का वर्णन करना चाहता हूँ।

जैसे: –

गुरसिक्खों की है सच्ची - सुच्ची प्रकाशमान दाड़ी ।।

श्रद्धावान जवानों ने भी जैल - फिक्सो से हैं सवारी।।

मनमुखों की दाड़ी ऐसी दिखे, जैसे झूलसी हुई झाड़ी।।

बेमुखों ने दाड़ी तीखे कांटों की तरह है बिगाड़ी।।

बेवकूफों की दाड़ी ऐसी दिखे जैसे मीठे ऊपर चीटियां।।

लोग हंसे और खिल्ली उड़ाएं, व्यंग में बजाएं सीटियां।।

उनको फिर भी शर्म न आये, लोक लाज से आंखें मीटियां।।

अब हम प्रकृति के सिद्धांतों का ध्यान से अध्ययन करेंगे। प्रकृति ने बच्चों को दाड़ी-मूंछे नहीं दी। जब नर बालक पूर्ण यौवन पर होता है। तब उसे दाड़ी-मूंछे पुरुष तत्व के रूप में उपहार स्वरूप मिलती हैं। इसके विपरीत नारी को दाड़ी-मूंछे प्रकृति ने नहीं दी। यही उस प्रकृति अथवा प्रभु का विधान हैं। हमें उसके विद्यान को समझना चाहिए तथा उसे स्वीकार करते हुए उसकी खुशी में प्रसन्नचित रहना चाहिए।

पुलिस सुप्रिटेंडेंट – आप के युक्ति पूर्ण तर्क मन को बहुत भाए हैं। वास्तव में मैंने जो आप पर केशों के विषय में प्रश्न किये थे। वे सब एक जिज्ञासु बन कर किये थे, मेरा आप का हृदय दुखाना या व्यंग करने का कोई विचार न था। मैं आप की तर्कशीलता से बहुत प्रभावित हूँ। कृप्या आप इस विषय में एक केशों की महत्त्वता पर पुस्तक अवश्य ही लिखे। मैं चाहता हूँ कि जब भी आप जेल से मुक्त हो उस समय आप मानव कल्याण के लिए 'केश गोष्ठि' नामक पुस्तक बहुत सी अन्य भाषाओं में भी प्रकाशित करवाये जिस से लोग प्राचीन भारतीय सभ्यता तथा प्रकृति के नियमों पर आधारित सिक्ख सिद्धांतों का सहज में अध्ययन कर सकें।

जहां तक मुझे मालुम है, हमारे पूर्वज तथा सभी ऋषि, मुनी तथा अवतार इत्यादि सभी केशधारी ही थे। महाभारत युद्ध काल तक पूर्ण प्रमाण मिलते हैं कि भारत की सभी स्वर्ण जातियां केशधारी ही थी। उदाहरण के लिए श्री कृष्ण जी ने अपने साले रुकमन का मृत्यु दण्ड अपनी पत्नि रुकमनी की सिफारिश पर बदल कर उस के केश कत्तल (खण्डन) करने का आदेश दिया तो वह वीर योद्धा रुकमन इस अपमान को न सहन कर सका। वह आत्म ग्लानी से पीड़ित होकर चिल्ला उठा और उसने अपनी बहन से कहा तुमने मेरे से धो (दुश्मनी) कमाया है, तू मेरी बहन नहीं शत्रु है तुमने मेरे जीवन को सुरक्षित करने के लिए मेरे केश काटवा कर अपमानित करवाया हैं, इसलिए मैं जीवन भर अपने को कलांकित समझूगां।

हां-मैं मानता हूँ कि आप के कहे अनुसार न जाने हमारी सभ्यता में कब से यह त्रुटी आ गई हैं कि हम सभी भेड चाल अनुसार केशों का मुण्डन करवाने लग गये हैं। वास्तव में बहू-गिनती में लोग केशों का खण्डन करते है अत: उन्होंने कभी प्रकृति के नियमों का विशलेषण किया ही नहीं अर्थात वे सभी अंधकार मय जीवन जी रहे हैं।

आप का कथन यह भी गीता का सारांश ही है कि हम शरीर नहीं एक आत्मा है। केवल शरीर ही

मरता है, आत्मा दूसरा शरीर धारण कर लेती है और बार-बार यहीं नियम चलता रहता है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार बाल काटने पर वे पुन: उगाते ही चले आते हैं। परन्तु न काटने पर एक निश्चित लम्बाई तब बढ़ कर रूक जाते हैं और मरे हुए बाल स्वयं ही कंघे द्वारा झड़ जाते हैं।

शहीद भगत सिंह तथा भाई रणधीर सिंघ जी का मिलन व संवाद

यह एक बिडम्बना ही थी कि जब भाई रणधीर सिंघ जी को उनके कैद की अवधी समाप्त होने से पूर्व वापस पंजाब की मुख्य जेल लाहौर लाया गया तो उन्हीं दिनों भगत सिंघ को फांसी का दण्ड सुनाया जा चुका था। वह फांसी लगने की प्रक्रिया में लाहौर जेल में एक विशेष काल कोठरी में कैद थे। जब यह समाचार भगत सिंह को मिला कि गद्‌दर पार्टी के सैनानी रणधीर सिंघ जी आजीवन कारावास काट कर रिहाई के लिए सैंट्रल जेल में वापस लाये गये हैं, तो वह उन से मिलने के लिए ललायत रहने लगा। उसने आंदोलनकारी बनने से पहले उनकी देश भक्ति के सोहले तथा उज्जवल जीवन के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। अत: वह चाहने लगा कि मेरी फांसी से पहले यदि उनसे केवल एक बार मुलाकात हो जाये। इस कार्य के लिए उसने जेलर साहब से अनुरोध किया कि मुझे उनसे मिलने का एक अवसर दिया जाये, परन्तु जेलर साहब ने अनुरोध स्वीकार नहीं किया। यही अनुरोध जब भाई रणधीर सिंघ जी तक पहुंचा तो उन्होंने भक्त सिंह को संदेश भेजा कि वह उसी पुराने स्वरूप में लोट आये। मैं उसे साबुत सूरत-दसतारधारी पुरुष के रूप में देखना चाहता हूँ।

जल्दी ही रणधीर सिंघ जी की रिहाई के आदेश आ गये उनदिनों जेल के बाहर जनता उनके स्वागत के लिए प्रतिक्षा में खड़ी रहने लग गई थी । अत: जेलर को चिन्ता हुई कि इन की रिहाई में कोई बाधा न हो और कोई प्रदर्शन भी नहीं होना चाहिए अत: कौन सी विधि निकाली जाए। इस काम को स्थानीय दरोगा ने हल कर दिया उसके सुझाव पर जेलर ने भाई रणधीर सिंघ जी को रिहाई से पहले भक्त सिंघ की काल कोठरी पर भेज दिया। जब यह बात भक्त सिंह को मालूम हुई तो वह प्रसन्नता में फूला नहीं समाया। उसने भाई रणधीर सिंघ जी को फतेह बुलाकर स्वागत किया और विचार विमर्श प्रारम्भ हुआ। इस बीच भगत सिंह के नेत्रों में आंसू छलक पड़े। वह रूधन स्वर में बोला मैंने तो आप से मिलने की आशा छोड़ ही दी थी, मान लिया था कि मेरे भाग्य में यह सब नहीं है, परन्तु सौभाग्य से आप के दर्शन कर पा रहा हूँ। उसने कुछ क्षण भावुक्ता में शान्त रह कर काटे और वह फिर बोला मैंने आप के विषय में बहुत कुछ सुना और पढ़ा हुआ है, कि गद्‌दर पार्टी के आंदोलनकारी बहुत बड़े त्यागी और बलिदानी पुरुष हैं। वे निष्काम, निस्वार्थ देश भक्ति की भावनाओं से ओत-प्रोत होकर कार्य करते हैं! मैंने आप लोगों से ही प्रेरणा ली थी परन्तु मेरे सभी कार्य में स्वार्थ की भावनाएं प्रबल थी मैं चाहता था कि मेरा नाम हो और

लोक प्रियता के शिखर पर पहुंचू, वह तो हो गया। वास्तव में मैं जानता हूँ कि सन् 1914 - 1915 वाले क्रांतीकारियों की तुलना में मेरे सभी कार्य तुच्छ हैं। मैं आज आप को सत्य बताता हूं कि मैंने अंग्रेज़ अधिकारी सांडरस की हत्या नहीं की थी। वह तो मुझ पर झूठा आरोप लगा दिया गया था। जिसे मैंने प्रसिद्धि प्राप्त करने के विचार से स्वीकारा था क्योंकि मुझे इस काण्ड से प्राप्तियां होने की आशा थी। वैसे भी मैं मृत्यु दण्ड से बच नहीं सकता था यह तथ्य मुझे मालुम था।

भाई रणधीर सिंघ जी - बेटा जी, आपने अनमोल निधि सिक्खी स्वरूप क्यों खो दिया?

भगत सिंह - मुझे इस मुर्खता पर बहुत दुख है। हमारे परिवार में कई पीड़ियों से सिक्खी चली आ रही है, मैं परम्परागत सिक्ख हूँ। मुझे आप द्वारा जो संदेश प्राप्त हुआ है, मैं उस को पालन के लिए तत्पर हूँ, मैं फिर से सिक्खी स्वरूप धारण कर लूंगा। मैं यह भयंकर भूल करना नहीं चाहता था परन्तु उस समय प्रस्थितियां ही ऐसी थी कि मुझे वेष - भूषा बदलने के लिए अति आवश्यकता अनुभव हो रही थी। वैसे मैं एक सन्यासी का स्वांग धारन करने की चेष्टा में था परन्तु मेरी मित्र मण्डली ने मुझे गुमराह किया जिस कारण मैं यह कुकर्म करने के लिए विवश हो गया।

भाई रणधीर सिंघ जी - आप के कथन अनुसार आप को इस कुकर्म करने और अपने सिक्खी स्वरूप को त्यागने का पश्चाताप है? तो पुन: उस क्यों धारण नहीं किया?

भगत सिंघ - यदि मैं सिक्खी स्वरूप में होता तो मुझे हिन्दू प्रैस (मीडिया) ने स्वीकारना ही नहीं था। अत: उन्होंने मेरे विषय में मौन धारण कर लेनी थी। जैसा कि आप लोगों के साथ हुआ है। जो आज मुझे प्रचार मिला है उस का आधार मेरा वर्तनमान स्वरूप ही है। मैं भी चाहता था, कि किसी भी कारण से हो परन्तु मुझे प्रसिद्ध मिलनी ही चाहिए। दूसरा कारण यह भी रहा है कि मेरे मित्रगण मुझे जो आज अपनत्व देते है वह मुझे नहीं मिल पाता। मैं अकेला ही रह जाता। विशेष कर भट्ट्ट केश्वर दत्त की मुझे सहानुभूति जो मिलती रही है वह कभी भी नहीं मिल पाती।

भाई रणधीर सिंघ जी - इस सब बातों का अर्थ तो यहीं हुआ कि तुम्हारा लक्ष्य केवल तुच्छ सी बड़ाई प्राप्त करना था न कि देश भक्ति के लिए बिना कामना मर मिटना?

भगत सिंघ - मैं मानता हूं कि हमारे लक्ष्य तुच्छ थे हम किसी भी प्रकार से गद्दर पार्टी के सदस्यों की तरह निष्काम उच्चे आदर्शवादी न थे। क्योंकि हमें आध्यात्मिक दुनियां की प्राप्तियों की मर्यादा का ज्ञान है ही नहीं। मेरा सोभाग्य होता यदि मुझे आप की संगत में रहने के लिए कुछ दिन प्राप्त होते। जिस से मेरे आत्मज्ञान में वृद्धि हो जाती।

मैं आप को एक अपने हृदय का रहस्य बताना चाहता हूँ कि मैं कूसंगियों के साथ रहने के कारण नास्तिक हो गया हूँ, मेरी प्रभु के अस्तित्व में आस्था ही नहीं रही!!

भाई रणधीर सिंघ जी - बेटा मैं तेरी सच्चाई और स्पष्टतावादी, निरछल कथनी का कायल हो गया हूँ। अब मैं तुझे केशधारण करने के लिए बाध्य नहीं करूंगा। क्योंकि नास्तिक व्यक्ति के लिए इस का कोई लाभ नहीं। मैं तो चाहता हूँ कि तुम मृत्यु दण्ड से पहले आस्तिक हो जाओं ताकि तुम्हें प्रभु चरणों में स्थान प्राप्त हो सके? मैं तुम्हें यह यहां बताना चाहता हूँ कि तुम शरीर नहीं हो। एक आत्मा हो जो इस शरीर में बस्ती है। यह शरीर नश्वर है वह तो छूट जायेगा। परन्तु तेरी आत्मा को दूसरा शरीर धारण करना ही होगा। तुम बार-बार नये शरीर धारण करोंगे, जब तक प्रभु चरणों में स्वीकारिये नहीं हो जाते। अत: आवागमन का चक्र चलता ही रहेगा।

यह शब्द बहुत भावुकता में कह गये थे। जिस का प्रभाव भगत सिंह के अंत:करण की गहराईयों में उत्तर गया। वह मूर्छित मुद्रा में कुछ समय गहन विचरों में खौ गया। तत्पश्चात वह सावधान हुआ और मेरे पावों की और लपका परन्तु मैंने उसे थाम लिया। इस पर वह बोला!

भगत सिंह - आज आप के प्रवचनों ने मेरी आत्मा को झंझोड़ दिया है, उस पर चढ़ा हुआ असत्य का पान उत्तर गया है, मुझे आत्मा अमर दृष्टिगौचर हो रही है। आत्मा-प्रमात्मा का ही अंग है मुझे एहसास हो रहा है।

पहले तो मैं एक दिखावे भर का बहादुर, वीर पुरुष बन रहा था, वास्तव में मैं मृत्यु दण्ड से भय-भीत था। मेरे अन्दर यह डर समाया हुआ था कि मैं मृत्यु के बाद मिट जाऊगां अत: मैं मरना नहीं चाहता था परन्तु अब मैं वास्तव में बीर पुरुष बन गया हूँ आप के वचनों ने मुझे नवजीवन प्रदान किया है। मैं अब सहहर्ष फांसी का रस्सा चूमूगा।

अब आप का यह बेटा भगत सिंघ आस्तिक हो गया। मैं अब अपने पुराने सिक्खी स्वरूप में हृदय से लोट आऊगां। मृत्यु दण्ड के पश्चात जो भी प्रभु इच्छा से शरीर धारण करू परन्तु उस समय मैं गुरू चरणों का सेवक बनकर विचरण करुगां और चढ़दी कलां में रहूँगा।

अनुवाद कर्त्ता

जसबीर सिंघ फोन: 099881-60484

Type Setting : Radheshyam Choudhary
Mob.: 098149-66882

निम्नलिखित वेबसाइट में दस गुरूजनों का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत विस्तृत रूप में अवश्य देखें तथा पढ़ें।

www.sikhworld.info
or
www.sikhhistory.in

E-mail : info@sikhworld.info
&
jasbirsikhworldinfo@gmail.com

ਉਪਰੋਕਤ ਵੇਬ ਸਾਇਟ ਵਿੱਚ ਦਸ ਗੁਰੂਸਾਹਿਬਾਂਨ ਦਾ ਸੰਪੂਰਨ ਜੀਵਨ ਬਿਊਰਾ ਵਿਸਤਾਰ ਸਹਿਤ ਜ਼ਰੂਰ ਦੇਖੋਂ ਅਤੇ ਪੜ੍ਹੋ ਜੀ।

इस वैब साईट की विशेषता

इस में है एक विशाल सिक्ख संग्रहालय (Museum)

श्री गुरु नानक देव जी के जीवन वृंत्तातों से सम्बन्धित घटना क्रमों के चित्रों से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के जीवन काल तक काल्पनिक तस्वीरों जो इतिहास के द्रसाती हैं तथा उनके नीचे हैं हिन्दी और पंजाबी में टिप्पड़ियां (फुटनोट) जो घटनाक्रम अथवा इतिहासिक प्रसंगों का वर्णन करती हैं।

नोटः – यह कार्य बच्चों की रुची को मद्देनज़र रख कर किया गया है ताकि वे सहज में अपना इतिहास जान सके। मुझे आशा है सिक्ख जगद् के किशौर अथवा युवक इस विधि से लभान्वित होंगे क्यों कि इस प्रणाली में आधी बात तस्वीरे कहती हैं तथा आधी बात निम्नलिखित फुटनोट कहते हैं। इस प्रकार पाठकों के मन में अपने इतिहास को जानने के प्रति रुची जागृत हो जाती है। अब आप इस के आगे सत्तारवीं + अठारहवीं + उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी के शहीदों के चित्र फुटनोट सहित देखेंगे। इस के साथ ही सिक्ख महापुरुषों अथवा महान व्यक्ति के लोग को भी देखेंगे। और टिप्पड़ियों द्वारा जाने जाएगे। कृप्या आप सिक्ख मयुजियम पर अवश्य ही किलिक किजिए।

नोट :–

1. इस वृतांत को आगे पढ़ने के लिए कृपया जीवन वृतांत गुरू अंगद देव जी पढ़े।
2. यदि कोई इसे पुनः प्रकाशित करवाना चाहे तो वह निःशुल्क बटवा सकता है।

Download Free